Impact Factor – 6.261 Special Issue - 131 Feb. 2019 ISSN – 2348-7143

18-19

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal

Multidisciplinary International E-research Journal

Rani Laxmibai Mahavidyala IQAC PARO Dist

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

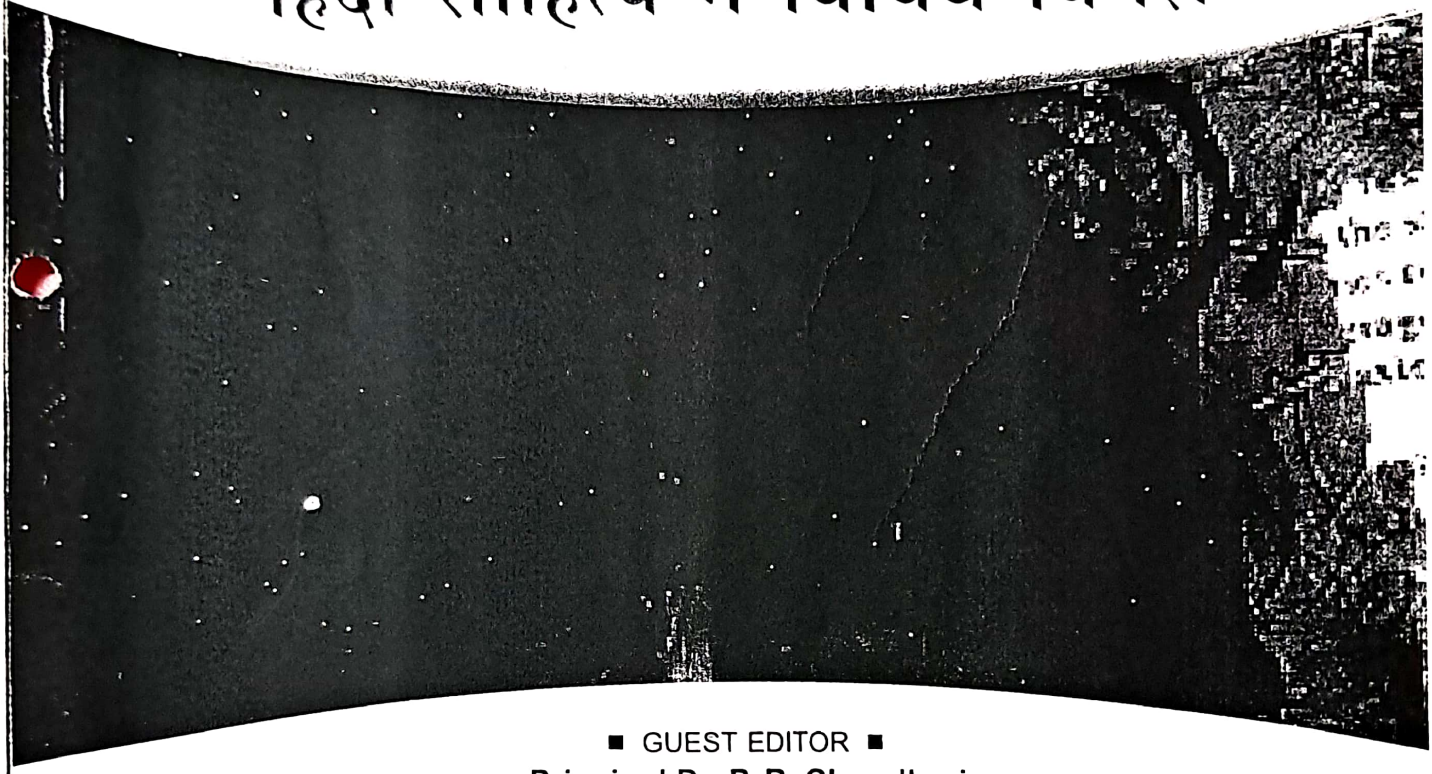

■ GUEST EDITOR ■
Principal Dr. P. R. Chaudhari

■ EXECUTIVE EDITOR ■
Dr. Vijay A. Sonje

■ ASSOCIATE EDITOR ■
Dr. Kalpana L. Patil
Dr. Ishwar P. Thakur
Dr. Satish D. Patil

■ CHIEF EDITOR ■
Mr. Dhanraj T. Dhangar

RESEARCH JOURNEY

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

For Details Visit To : www.researchjourney.net SWATIDHAN PUBLICATIONS

SELF ATTESTED

Scanned with OKEN Scanner

२२	'कबूतरखाना' उपन्यास में महानगरीय जीवन डॉ. महेंद्रसिंह रघुवंशी	०५२
२३	अनामिका की कहानियों में चित्रित नारी विषयक दृष्टिकोण प्रा.डॉ. जगदीश चव्हाण	०५४
२४	वृध्दावस्था की 'चार दरवेज' में दशा-दिशा प्रा.डॉ. पी.आर. गवळी	०५६
२५	'अकेला मकान' : नारी जीवन की व्यथा एवं कथा डॉ. अमृत खाडपे	०५९
२६	मंजुल भगत के उपन्यासों में नारी डॉ. अशोक शामराव मराठे	०६१
२७	हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श केन्द्रित उपन्यास प्रा.डॉ. कृष्णा प्रल्हाद पाटील	०६३
२८	ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में समकालीन बोध प्रा.डॉ. चंद्रभान सुरवाडे	०६५
२९	महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में धार्मिक चेतना डॉ. राजेश भामरे	०६८
३०	'काला पादरी' उपन्यास में आदिवासी समाज जीवन डॉ. प्रमोद एम चौधरी	०७०
३१	'झीनी झीनी बीनी चदरिया' उपन्यास में नारी विमर्श प्रा.डॉ. अशोक दौलत तायडे	०७२
३२	समकालीन हिन्दी कहानियों में दलित-विमर्श प्रा.डॉ. सुनील मुरलीधर पाटील	०७३
३३	हिंदी साहित्य में किसान विमर्श प्रा.डॉ. विजय घुगे	०७६
३४	'पोस्ट बॉक्स नं. २०३ नाला सोपारा' - किन्नर के घर वापसी का अधुरा आख्यान प्रा.डॉ. महेंद्रकुमार रा. वाढे	०७८
३५	फणीश्वरनाथ रेणु के कथा-साहित्य में नारी जीवन डॉ. आर.के. जाधव	०८०
३६	आदिवासियों का लेखा-जोखा 'जंगल पहाड़ के पाठ' प्रा.डॉ. प्रमोद गोकूळ पाटील	०८२
३७	अनामिका की कहानियों में व्यक्त सामाजिकता प्रा.डॉ. सुनीता कावळे	०८४
३८	वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में चित्रित दलित विमर्श प्रा.डॉ. के.डी. बागुल	०८७
३९	'सफर में साथ-साथ' मुक्तक संग्रह में नारी विमर्श डॉ. विनोद विश्वासराव पाटील	०८९
४०	लिंगभाव की दृष्टीकोन से 'रीढ़ की हड्डी' नाटक एक चिंतन डॉ. शैलजा डोंगर भंगाळे, प्रा. पूनम भिमराव जमधडे	०९२
४१	हिन्दी साहित्य में आदिवासी विमर्श प्रा. मच्छिंद्र गुलाब ठाकरे	०९४
४२	दलित विमर्श का प्रमाणिक दस्तावेज-'मुर्दहिया' प्रा.डॉ. रविंद्र खरे	०९६
४३	'पचपन खम्भे लाल दीवारें' - उपन्यास में नारी विमर्श प्रा. शेख जाकीर एस.	०९८

Rani Laxmibai Mahavidyalaya IQAC PAROLA Dist.Jalgaon

SELF ATTESTED

Scanned with OKEN Scanner

ISSN : 2348-7143
Feb. 2019

हिंदी साहित्य में किसान विमर्श

प्रा.डॉ. विजय पुगे
राणी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, पारोला

भारत किसानों का देष है। किसान हमारा अन्नदाता है। हिन्दी साहित्य में भारतीय किसानों की खुब चर्चा हुई है। युगोंसे षोशित, पीड़ित किसान आज हमारे साहित्यिक विमर्ष में कहाँ है? यह प्रष्न मन में उठता है। पिछले कुछ सालों में कही किसान खेती छोड़कर दूसरे कामों में उलझ गये है। कुछ अपनी खेती किराए पर दे रहे है तो कुछ दूसरों की खेती कर रहे है। अस्सी प्रतिषत किसान कर्ज में डुबे हुए है। किसानों में निरंतर आत्महत्याएं रुकने का नाम नहीं ले रही है। विमर्षो के इस दौर में किसानों पर बहुत कुछ पढ़ने में आता है। परिस्थिति, प्रकृति का मारा किसान अपनी खेती और फसल को लेकर सपनों की उड़ान भरता है। किन्तु वास्तविक हालात उसे न कर्ज से उबार पाते है, न बेटी का विवाह करने देते है। साहुकारी, बैंकवालों का तगादा, दो जून के भोजन की चिंता उसे निराषा के घोर अंधेरे में झोंक देती है। अंत में आत्महत्या का आखिरी रास्ता वह अपनाता है। आज ऐसे भी किसान है जिनके पास पचास-सौ एकड़ कृशि भूमि है। महंगी गाड़ियाँ है, महंगे ट्रैक्टर है लेकिन नई पीढ़ी में जन्मे इनके बच्चे खेती के अलावा नौकरी करना चाहते है। राजनीति में रुचि रखते है। सरकार की ओर से बिजली, टैक्स, कर्ज, कृशि उपकरणों मे कुछ प्रतिषत रियायत देने के बावजूद सामान्य किसान पुष्तैनी खेती परंपरागत तरीके से करने पर मजबूर है। षहरों तथा गाँवों की नज़दिकी जमीनों पर फैक्ट्रीयाँ बन रही है। साथ ही इन जमीनोंपर बिना खेती के ठप्पे लगवाकर इमारें तथा मकान बनाये जा रहे है। नकली खाद, मौसम की मार के कारण खेतों की फसल गायब हो जाता है। इस प्रकार अपनी ही किस्मत को कोसनेवाले भारतीय किसान का जीवन मानाक बनकर रह जाता है।

हिन्दी साहित्य में भारतीय किसानों की दयनिय हालत को प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में पूरजोर तरीके से उठाया है। उन्होंने एक साधारण किसान को नायक बनायत डॉ. अर्जुन चव्हाण लिखते है -''प्रेमचंद जानते थे कि जब तक किसानों में चेतना जागृति नहीं होगी तब तक गुलामी और षोशण से उनकी मुक्ति संभव नहीं।''१ होरी भलेही अकेला, दूर्बल दिखाई देता हो किन्तु षोशण के प्रति विद्रोह के बीत उन्हीं दिनों बोये गये थे। 'गोदान' में रुपा का पति रामसेवक किसानों में चेतना जगाने का काम करता है। वह दातादीन से कहता है : ''मुकदमा तो एक न एक लगा ही रहता है महाराज! संसार में गऊ बनने मे काम नहीं चलता। जितना दबो, उतना ही लोग दबाते हैं। थाना-पुलिस, कचहरी-अदालत सब हैं हमारी इच्छा के लिए, लेकिन इच्छा कोई नहीं करता। चारों तरफ लूट हैं। जो गरीब है, बेकस है, उसकी गर्दन काटने के लिए सभी तैयार रहते है। भगवान न करे, कोई बेईमानी करे। यह बड़ा पाप है, लेकिन अपने हक और न्याय के लिए न लड़ना उससे भी बड़ा पाप है। तुम्ही सोचो, आदमी कहाँ तक दबे?''२ आज किसान अपनी मांगो के लिए आंदोलन करता है। वह सरकार से लड़ने की ताकत रखता है। इस दृश्टि से प्रेमचंद का 'गोदान' आज भी प्रासंगिक है।

प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रात' का नायक हल्कू की पत्नी मुन्नी कड़ाके की ठंड से बचने के लिए कम्मल खरीदना चाहती है, किन्तु सहना जैसे साहुकार से अपमानित होने के डर से वह अपनी मजूरी से एक-एक पैसा काटकर जो तीन रुपये कम्मल के लिए जमा करके रखता है वे सहना को दे देता है। भारतीय किसान की त्रासदी यह है कि साहुकारों के चंगुल से उसका पीछा छूटता ही नहीं। हल्कू की पत्नी मुन्नी कहती है - ''जरा सुनूँ तो कौन-सा उपाय करोगे? कोई खैरात दे देगा कम्मल? न जाने कितनी बाकी है, जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते? मर-मर का करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आये।''

आज की जमीनी हकिकत यह है कि किसानों से ज्यादा मजूरी करनेवाला सुखी रहता है। मुन्नी हल्कू को यही सलाह देती है कि खेती छोड़कर मजूरी करो। हल्कू ठंड से बचने के लिए आठ चिलम पी जाता है किन्तु कम्मल के अभाव में ठंड का सामना नहीं कर पाता। उस समय उसे सामाजिक विशमता याद आती है। वह जबरा कुत्ते से कहता है - ''कलसे मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे। यहा रॉड पछुआ न जाने कहाँ से बरफ लिए आ रही है। उठूँ, फिर एक चिलम भरुँ। किसी तरह रात तो कटे ! आठ चिलम तो पी चुका। यह खेती का मजा है। और एक-एक भगवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाडा जाय तो गरमी से घबड़ाकर भागे। मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ-कम्मल। मजाल है, जोड़े का गुजर हो जाय। तकदीर की खुबी! मजुरी हम करें, मजा दुसरे लूटे।'' किसानों का अपने पालतू जानवरों के प्रति प्रेम प्रस्तुत कहानी में व्यक्त हुआ है। यह तो प्रेमचंद की कलम का जादू है कि वे भारतीय किसान और खेती का ऐसा चित्रण करते है कि कहानी पढते समय पाठक को उसमें स्वानुभूति होने लगती है। नीलगायों द्वारा खेत का सफाया हो जाने पर भी हल्कू सुबह मुन्नीको प्रसन्न दिखाई देता है। क्योंकि खेती करके भी किसानों की हालत जैसे के तैसे रहती है। मजूरी करके मालगुजारी भरना वह पसंद करता है।

कैलास बनवासी की कहानी 'बाजार में रामधन' किसान विमर्ष की एक सषक्त कहानी है। न चाहते हुए भी रामधन को अपने बैल बालोद के बाज़ार में लेकर जाना पड़ता है। कहानी के रामधन का व्यक्तित्व आम भारतीय किसान की तस्वीर प्रस्तुत करता है। नई पीढी के युवा वही परंपरागत खेती से छुटकारा पाना चाहते है। रामधन का भाई मुन्ना कोई छोटा-मोटा धंदा करना चाहता है। धंधा करने के लिए पैसा नहीं है। सालों से घर की वहीं खस्ता हालत है। रामधन और उसकी पत्नी जैसे तैसे मेहनत-मजूरी करने अपना पेट पालते है। मुन्ना इसमें परिवर्तन चाहता है। वह हल-बैल की जगह किराए के ट्रैक्टर से खेती करने की सलाह देता है। वह रामधन को बैल बेचने की बात करता है। आखिर पिता के खरीदे हुए बैलों पर वह अपना भी अधिकार दिखाता है। रामधन ने बचपन से जिन्हें पाला था उन्हें बेचने की बात सुनकर रामधन को धक्का लगता है। रामधन के हर काम में साथ देने वाले बैलों की उसने खूब सेवा की थी। किसानों का अपने पालतू जानवरों से परिवार का नाता रहता है। वे उसके सुख-दुःख के साथी रहते है। उन्हें बेचने की बात प्राण निकालकर देने जैसी होती है। किसान को हर जगह ठगने का प्रयास किया जाता है। बचपन से पाले हुए बैलों को बाजार में ज्यादा दाम मिलनेपर भी बेचने का मन नहीं करता। रामधन भुलऊ महाराज, सहदेव दलाल, भुनेष्वर दाऊ, चईता दलाल सबको चकमा देकर बैल बेचता नहीं। बाज़ार में किसान अपनी अनात हो या जानवर जब ले जाता है लेनेवाले सभी उसको ठगना चाहते है। किसी को किसान की मेहनत नहीं दिखाई देती। सबकुछ जानते-समझते हुए किसान को मजबूरी की वजह से खामोष रहना पड़ता है। रामधन का अन्तर्मन बैलों की मन की थाह`ने का प्रयास करता है। कैलास बनवासी की इस कहानी पर प्रेमचंद का पूरा प्रभाव दिखाई देता है।

निश्कर्शत: कहा जा सकता है कि, किसान का अपनी जमीन से अटूट रिष्ता है। वह सबसे अधिक लगाव उसीसे रखता है। लाख प्रलोभन भी उसे

SELF ATTESTED

Scanned with OKEN Scanner